European Journal of Business & Social Sciences
Available at https://ejbss.org/

ISSN: 2235-767X
Volume 07 Issue 03
March 2019

ममता कालिया के कथा साहित्य में भाषा शैली

कुलदीप

(शोधार्थी)

पी0एच0डी0

महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक

Email: kuldeepkhanna5@gmail.com

शोधालेख सारः चूंकि साहित्य की विविध विधाए भाषा पदों की संवाहिका होती हैं और इसी से साहित्य एवं साहित्यकार के भावों को अच्छे से प्रयुक्त किया जाता है। ममता कालिया भी इसकी अपवाद नहीं है, क्योकि उन्होनें अपनी साहित्य विद्या में भाषा पदों व भाषा शैली का प्रभावी ढ़ंग से निर्वहन किया है। उन्होनें अपनी रचनाओं में अपने मानसिक भावों को भाषा के माध्यम से ही पूर्ण किया है। अतः ममता कालिया के लेखन में भाषा की प्रधानता है तथा उनकी रचना की भाषा ही उसे अर्थता प्रदान करती है। इसी तरह उनकी भाषा शैली मार्मिक प्रभावी एवं सहज संप्रेषणीय है। उनके लेखन की सुंदरता और उनका लेखन के प्रति भाव एवं रोचकता उन्हें अच्छी–अच्छी रचनाओं के लिखने का सूत्र है। वह एक समझदार तथा व्याकरण का पूर्ण ज्ञान रखने वाली लेखिका है। उन्होनें अपने उपन्यासों एवं कहानियों में नारी का एक अलग ही नजरिया दिखाया है। उनकी रचनाओं में नारी के संवाहक जिन भाषिक उपकरणों का प्रयोग किया है, वह बहुत ही मार्मिक प्रभावी एवं आकर्षक प्रतीत होते हैं। इसलिए अधिकांश साहित्यकार व आलोचक उनकी भाषा भावों से भरपूर तथा लोगों के दिलों और दिमाग पर अमिट छाप छोड़ने वाली है। प्रस्तुत शोध–पत्र में ममता कालिया की भाषा शैली का अध्ययन किया गया है।

मूल शब्दः भाषा, भाषा शैली, संप्रेषणीय, मुहावरे, लोकोक्तियॉ, सूक्तियां, सहज, सरल।

भूमिका : वस्तुतः किसी भी साहित्य व साहित्यकार का प्रभाव उसकी भाषा शैली से जुड़ा होता है। जिस साहित्यकार की रचना सहज व सरल भाषा में होती है तो साहित्यकार अपने लक्ष्य में सफल रहता है और उसके भावों को पाठकों तक प्रभावशाली ढंग से

European Journal of Business & Social Sciences
Available at https://ejbss.org/
ISSN: 2235-767X
Volume 07 Issue 03
March 2019

पहुंचाया जा सकता है। इससे बढ़कर किसी साहित्यकार के लिए गर्व की बात नहीं होती। इस दृष्टि से ममता कालिया ने अपनी भाषा को सहज, संप्रेषणीय एवं प्रभावोत्पादक बनाने के लिए मुहावरों, लोकोक्तियों एवं सूक्तियों का खुलकर प्रयोग किया है। इन विभिन्न भौतिक साधनों से ही लेखक अपने कथ्य को सहज एवं सरल बनाकर समाज के समक्ष प्रस्तुत करता है। ममता कालिया की भाषा की जीवंतता का मुख्य रहस्य यह है कि इनमें उन्होंने प्रचलित एवं कुछ नए नए मुहावरों का सुंदर प्रयोग किया है, जैसे– अंगारे उगलना, हक्का–बक्का रह जाना, नाक पर मक्खी न बैठने देना, छाती पर मूंग दलना, आँखें लगाना, हतप्रभ रह जाना, खिल्ली उड़ाना, आकाश में उड़ना आदि।

भाषा–शैली : वास्तव में ममता कालिया की भाषा शैली सबसे अलग है। उन्होंनें अपने भावों को सहज एवं सरल ढंग से प्रस्तुत करने के लिए अपने साहित्य की भाषा को भावानुकूल बनाया है। भाषा की संजीवता के गुण कारण ही उनकी भाषा में संप्रेषणीयता का गुण भी आया है और उनका प्रयोग सहज, सरल, स्वभाविक एवं भावानुकूल है। इसके साथ–साथ भाव परिवर्तन के साथ–साथ उनकी भाषा शैली में भी परिवर्तन होता जाता है। इसीलिए उन्होंने शैली को छोड़ा नहीं है बल्कि यथावसर व्यंग्यात्मक, भावात्मक,वर्णनात्मक, काव्यात्मक, संस्मरणात्मक आदि रूप प्रदान किया है। चूंकि उनके लगभग सभी उपन्यास वर्णनात्मक शैली में लिखे गए हैं, लेकिन कहीं भी व्यर्थ की वर्णनात्मकता नहीं दिखाई देती। इसके साथ ही और भी अनेक शैलियों की बौछार होती रहती है, जिसके कारण उनकी शैली और ज्यादा अधिक रोचक एवं आकर्षक बन जाती है जो पाठकों पर अपनी अमिट छाप छोडने मे सफल रही है। उनकी भाषा शैली को निम्न प्रकार से समझा जा सकता है:–

वर्णनात्मक शैली : अधिकांश साहित्यकार इस बात से सहमत हैं कि ममता कालिया ने अपनी रचनाओं में वर्णनात्मक शैली का प्रयोग किया है, लेकिन उनके वर्णन में कहीं भी शैथिल्य या पुरानापन नहीं है। उनकी अधिकांश रचनाओं में रोचकता, नवीनता एवं स्वाभाविकता के गुण सर्वत्र दिखाई देते हैं। ममता कालिया की वर्णनात्मक शैली का एक उदाहरण प्रस्तुत है – ''दिल्ली जंक्शन का समझ न आने वाला भूगोल, उन्हें सिर्फ विस्मित

European Journal of Business & Social Sciences
Available at https://ejbss.org/
ISSN: 2235-767X
Volume 07 Issue 03
March 2019

ही नहीं विमुग्ध भी कर रहा था। आखिर वे अपने देश की राजधानी में थे। उन्होंने अपनी अटैची क्लॉक रूम में रखी औरफिर वह घूमने निकल पड़े। दिल्ली उनकी देखी हुई थी, फिर भी उनके लिए नई थी। हर बार उसमें इतना कुछ नया जुड़ जाता की वह नई दिल्ली हो जाती है। उन्हें लगा वह अपने शहर से चलकर हिंदुस्तान के नहीं किसी और देश के किसी शहर में आ गए हैं। अजब शहर था यह, स्वदेशी होते हुए भी विदेशी और विदेशी होते हुए भी स्वदेशी। जैसे–जैसे शाम उतर रही थी। शहर शरारती होता जा रहा था। कनॉट प्लेस के गोल घेरे का चक्कर लगाते–लगाते भी चकरा गए। विजय चौक से जब उन्होंने इंडिया गेट की तरफ देखा तो रात चांद और बिजली के वैभव के बीच उन्हें लगा वे दुनिया का सबसे सुंदर दृश्य देख रहे हैं। उस दृश्य का रूप और विस्तार, लाल पत्थरों का स्थापत्य, सब कुछ अनुपम था। पंकज और संजीव को लगा वह एक दुर्लभ अनुभव से गुजर रहे हैं। जीवन में पहली बार भी भारतीय नागरिक होने के गर्व से भर गए।'' दुक्खम सुक्खम, अंधेरे का तालाब उपन्यासों में इनकी वर्णनात्मक शैली का वर्णन बहुत ही शानदार है। उनके उपन्यासों के केंद्र में नारी है जहाँ कहीं भी वर्णनात्मक शैली में नीरसता उत्पन्न नहीं हुई है।

भावात्मक शैली : ममता कालिया ने अपनी रचनाओं में भावनात्मक शैली का भी बड़े ही सुंदर ढ़ंग से प्रयोग किया है। उनकी रचनाओं में भाव के साथ–साथ सरलता, सहजता, सुंदरता तथा अच्छी सोच का वर्णन होता है। उनकी भाषा शैली में अच्छी–अच्छी कहानियों के साथ साथ उपन्यासों आदि में भी भाव का अच्छा प्रयोग किया है। ममता कालिया के लेखन में भाव की प्रधानता होती है। उन्होंने अपनी रचनाओं में काव्यात्मकता के गुण का भी प्रयोग किया है। इसके लिए ममता कालिया ने अपनी रचनाओं में अपने कवि रूप को अच्छे तरीके तथा भावों से झलकाया है। उनकी रचनाओं में लिखित शब्दों के भाव बार–बार पढ़ने का मन करता है। उनकी रचनाओं में भाव का प्रयोग आसान शब्दों में किया गया है। लेखिका का भावात्मक शैली का उदाहरण प्रस्तुत है – ''पत्नी की नाक में नली लगी थी, जिसके रास्ते दूध, रस और पानी उन्हें दे दिया जाता था।ड्यूटी पर तैनात नर्स नियम से 3 घंटे बाद आती और उन्हेंपथ्य पिला जाती।बेटियों ने अफसोस में सिर

European Journal of Business & Social Sciences
Available at https://ejbss.org/
ISSN: 2235-767X
Volume 07 Issue 03
March 2019

हिलाया,'मम्मी होश में होती तो हम कोई ताकत की चीज बनाकर उन्हें खिलाते पर अब तो लिक्विड डाइट के सिवा कुछ दिया ही नहीं जा सकता। हमारा रुकने का क्या फायदा पापा हम जाएं ? ''नरोत्तम जी कामन बेटियों के आने से थोड़ा संभला था। उनके जाने की सुनकर वह फिर चिंतित हो गए,''मैंने अखबारों में पड़ा है कि कोमा वाले मरीज कई बार साल–साल भर होश में नहीं आते। अगर ऐसा हो गया तो – ''बेटियों ने कहा पापा आप तो अभी से घबरा गए। जरा सोचिए हमारी माँ ने चालिस साल आपकी सेवा की है, वह भी तब जब आप स्वस्थ और समर्थ थे। आज वे बीमार पड़ी हैं, तो आपका फर्ज है आप उनकी सेवा करें।''1

व्यंग्यात्मक शैलीः अन्य साहित्यकारो की तरह ममता कालिया की शैली का प्रधान गुण व्यंगात्मकता ही है। यह गुण उसके प्रत्येक उपन्यास एवं कहानी में दिखाई देता है। वे स्थान–स्थान पर व्यंग की बौछार करती हैं। दौड़, उपन्यास, लड़कियों का लघु उपन्यास आदि में व्यंगात्मक शैली लिखी जाती है। 'विद्यावती' प्रसव के बाद सवा माह की बच्ची को लेकर पति ग्रह आई, उसे नए सिरे से अपनी बदली हुई काया को स्वीकार करना पड़ा। नत्थीमल तीर की तरह लंबे पतले और वेगवान थे। पैदल चलते तो पीछे मुड़कर न देखते की संग चलने वाला साथ है, या पिछड़ रहा है। गेहुआँ रंग, तीखे नैन–नक्श, सुंदर नाक और आँखे ऐसी तेज की जिस पर नज़र पड़े उसे भेद कर रख दे। नत्थीमल ने पत्नी की देह–विषमता की गहरी चीढ़ और अस्वीकार से जीवन में प्रवेश दिया। उन्होंने आर्य समाजी सुधारवाद की झोंक में पुनर्विवाह के लिए बाल विधवा विद्यापति को चुना था, तो सिर्फ इसलिए की उनसे दस साल छोटी लड़की भाग दौड़ घर गृहस्थी के काम संभाल कर अपने को धन्य समझेगी। सभी वाणिक पुत्रों की भांति उनका गणित भी यही था, पैसा कमाने और खर्च करने का अधिकार उनका है। मेहनत, बचत और किफायत का कर्तव्य उनकी पत्नी का है। विद्यावती ने एक बार दबी जुबान में पति से कहा,''कहो तो बर्तन मांजने के लिए मेहरी रख लूं.तीन रूपये महीने पर राजी हो जाएगी।''नत्थीमल ने त्योरी चढ़ाकर कहा,''फिर तुम क्या करोगी सारा दिन ?'' लीला छोटी है और मुझे फिर दिन चढ़े

1ममता कालिया उसका योवन पृष्ठ संख्या 29

European Journal of Business & Social Sciences
Available at https://ejbss.org/
ISSN: 2235-767X
Volume 07 Issue 03
March 2019

हैं, ऐसा लगे है। नल के पास घुटने मोड़कर बैठना भारी पड़ जाए है। चाहेजैसे बैठ करमांज, मांजने तो तुझे ही हैं। मायके की लट साहिबी यहाँ नहीं चलेगी।''

''बेटे के चक्कर में बेटियाँ पैदा होती गई, इसे भी नत्थीमल 'विद्यावती' का दोष मानते रहे। नत्थीमल का गणित माना होता तो कवि मोहन पैदा ही न होता। लीला, कुंती के बाद जब विद्यावती को दिन चढे, तो किसी ने लाला नत्थीमल को सुझाया की जब लड़कियां पैदा होती हैं, तो तला ऊपर तो जरूर ही होती है। उस दिन नत्थीमल ने दुकान से लौटकर एक पुड़िया विद्यावती को दी।''[2]

नाट्य शैलीः ममता कालिया की रचनाओं में हमें नाट्य शैली के भी रूप देखने को मिलते हैं। प्रथम नाटक संग्रह 'यहाँ रोना मना है', आजकल अप्राप्य है, किंतु इस संग्रह की लगभग सभी नाटक कृतियाँ उनके द्वितीय नाटक संग्रह,'आप न बदलेंगे' में संग्रहित हैं जिसका प्रकाशन लोकभारती, इलाहाबाद द्वारा सन् 1989 में हुआ। ममता जी ने इस नाटक संग्रह में कुल पांच नाटक संकलित हैं। इनमें से एक दहेज समस्या पर लिखा गया है, जो इस नाटक संग्रह का सबसे बड़ा नाटक है।

''यह छोटी सी बच्ची यहाँ क्या कर रही है ?'' वंदना ने लक्ष्मी से कहाँ लक्ष्मी मेनन ने ध्यान से देखा,''शक्ल सूरत से यह इन कलाकारों की बच्ची लगती है। देखा नहीं कैसे मग्न होकर मां–बाप को देख रही है।''

''बेचारी अकेली बैठी है।''

''अकेली नहीं है, मां–बाप उसे देख सकते हैं।''

थोड़ी देर और बैठने की गरज से वंदना राव और लक्ष्मी मेनन ने चाय का एक और पोट मंगवाया। वेटर उनकी तरफ कोतूहल से देखने लगा। फिर 'यस मैडम' कह कर चला गया।

[2]ममता कालिया दुक्खम सुक्खम पृ० 99–100

European Journal of Business & Social Sciences
Available at https://ejbss.org/
ISSN: 2235-767X
Volume 07 Issue 03
March 2019

लक्ष्मी को अपने पिता के साथ क्लबों में जाने का अनुभव था। वह समझ गई की जी की संस्कृति में रात आठ बजे का वक्त चाय का नहीं है। अन्य मेजों पर व्हिस्की और वोदका का दौर था।

इस बार की चाय में कुछ कम लज्जत मिली। अब पुरुष स्वर में गाना चल रहा था,''होठों से छू लो तुम, मेरा गीत अमर कर दो।'' वंदना राव ने कहा–''लकी आज क्या वार है ?''

लक्ष्मी चिहुंक पड़ी ''अरे बाप रे, मैं तो भूल ही गई आज शुक्रवार है। कौन बनेगा करोड़पति रह जाएगा मेरा, जल्दी चलो वापस।''

''वंदना ने वेटर को इशारे से बुलाया और बिल मंगाया। बिल का भुगतान कर वे फौरन उठ दी, गाने के बीच में उठना अभद्रता की निशानी थी।पर उन्होंने इसकी परवाह नहीं की। आखिर उनका पसंदीदा प्रोग्राम कौन बनेगा करोड़पति छूट जाता।''

आत्मकथात्मक शैली: ममता कालिया स्वयं के जीवन का वर्णन करते हुए आत्मकथात्मक शैली का प्रयोग करती है। ममता कालिया ने अपने बहुत से उपन्यासों एवं कहानियों में इस शैली का प्रयोग किया है। उनकी आत्मकथात्मक शैली का उदाहरण है– 'एक निहायत बेवकूफ लड़की की तरह अपने खानदान के कच्चे चिट्ठे लिखकर उसने अपना जीवन हराम कर लिया था। एक–एक कर सभी नाता तोड़ चुके थे। रोज ही किसी न किसी की नालिश ठुकी रहती। हर महीने कोई न कोई रूठ जाता। जिस रफ्तार से कहानियों की गिनती बढ़ रही थी, उसी रफ्तार से रिश्तेदारों की गिनती घट रही थी। तंग आकर पूर्वा ने सोचा नहीं अब इस तरह नहीं लिखेगी। अब वह बखिया उधेड़ने की जगह रफू करना सीखेगी। क्या जरुरत है लोगों के दर्द बेपर्दा करने की जब लोग पर्दा पसंद करते हैं। अगर कभी दुःखी को दुःखी कह दिया तो दुःखी ही आंसू पोंछ दिलेरी से बोल पड़ा। ''ऐ बेवकूफ लड़की बसमेरे दुःख देखे तूने सुःख नहीं देखे।'' सुःखों में उसने सब कुछ गिना दिया– बोनस, बेटे, बाप दादा का मकान, बीवी के दसतोले के जेवर और बीमा की पॉलिसी। परममूर्ख की तरह पूर्वा अपनी कहानी लिए बैठी रह गई। जिसमें रोज रोज की हाय, मन की हाहाकार और संघर्षों का चित्तकार था।

ISSN: 2235-767X
Volume 07 Issue 03
March 2019

सारांशः इस प्रकार ममता कालिया के साहित्य का विश्लेषण भाषा की दृष्टि से करने पर पता चलता है कि भाषा के विभिन्न माध्यम उनमें रोचकता कैसे उत्पन्न होती है। ममता कालिया द्वारा संवादों को रोचक और आकर्षक बनाने क`लिए मुहावरें व लोकोक्तियों का प्रयोग। लेखिका की भाषा शैली पात्र के संवाद के अनुसार या परिस्थिति के अनुसार बदल जाती है। उन सभी शैलियों का वर्णन इस अध्याय में किया है। ममता कालिया द्वारा अपनी रचनाओं में विभिन्न प्रकार के शब्दों का प्रयोग किया है, तत्सम् शब्दों का प्रयोग किया है। तद्भव, देशज तथा विदेशी शब्दों की भरमार है। अतः ममता कालिया की भाषा शैली सहज, सरल व संप्रेषणीय भावों से परिपूर्ण है जो उनकी रचनाओं को महत्वपूर्ण दर्जा प्रदान करने में सक्षम है। उनकी कहानियों व उपन्यासों का अध्ययन करने के बाद इस कथन की पुष्टि हो जाती है।

संदर्भ सूचीः

- ममता कालिया, बोलने वाली औरत, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 1998।
- ममता कालिया, बेघर, साक्षरा प्रकाशन, दिल्ली, 2002।
- ममता कालिया, मुखौटा, लोक भारती, इलाहाबाद, 2003।
- ममता कालिया, चर्चित कहानियाँ, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, 2006 ।
- ममता कालिया, नरक–दर–नरक, नई दिल्ली, 2007।
- ममता कालिया, दस प्रतिनिधि कहानियाँ, किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली, 2008।
- ममता कालिया, एक पत्नी के नोट्स, नई दिल्ली, 2009।
- ममता कालिया, दुक्खम–सुक्खम, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, 2010।